दीरघ साँस न लेहि दुख, सुख साईंहिं न भूलि।

दई दई क्यों करत है, दई दई सु कबूलि।। 51।। ”

अब इसे पूर्ववत् प्रसंग सहित विस्तृत व्याख्या में समझते हैं —

प्रसंग

यह पद नीति और भक्ति दोनों का सुंदर समन्वय प्रस्तुत करता है। कवि किसी दुःखी या विपत्ति-ग्रस्त व्यक्ति को धैर्य और संतुलन का उपदेश देता है। इसमें जीवन के सुख-दुःख को ईश्वर की देन मानकर स्वीकार करने की भावना व्यक्त की गई है।

१. “दीरघ साँस न लेहि दुख, सुख साईंहिं न भूलि।”

शब्दार्थ

- दीरघ साँस = लंबी साँस (आह भरना, अत्यधिक शोक करना)
- लेहि = लेना
- साईंहिं = स्वामी/ईश्वर को
- न भूलि = न भूल

व्याख्या

कवि कहता है — दुःख में लंबी-लंबी साँसें मत भर। अर्थात् अत्यधिक विलाप और शोक मत कर।

और जब सुख प्राप्त हो, तब ईश्वर (स्वामी) को मत भूल।

यहाँ जीवन की समता (समभाव) का उपदेश है। दुःख में धैर्य और सुख में विनम्रता आवश्यक है। जो व्यक्ति दुःख में टूट जाता है और सुख में अहंकारी होकर भगवान को भूल जाता है, वह जीवन का संतुलन खो देता है।

२. “दई दई क्यों करत है, दई दई सु कबूलि।”

शब्दार्थ

- दई दई = ‘हे दैव!’ या ‘हाय दैव!’ कहकर रोना
- करत है = करता है
- सु = उसे
- कबूलि = स्वीकार कर

व्याख्या

कवि कहता है — तू बार-बार ‘हाय दैव! हाय दैव!’ क्यों कहकर विलाप करता है?

जो कुछ भी दैव (ईश्वर/भाग्य) ने दिया है, उसे स्वीकार कर।

अर्थात् जीवन में जो सुख-दुःख आता है, वह ईश्वर की इच्छा से आता है। अतः उसे शांत मन से स्वीकार करना चाहिए। निरर्थक रोना-धोना उचित नहीं है।

भावार्थ

इस पद में कवि ने जीवन-दर्शन प्रस्तुत किया है।

मनुष्य को दुःख में धैर्य रखना चाहिए और सुख में ईश्वर को नहीं भूलना चाहिए। बार-बार भाग्य को कोसना व्यर्थ है। जो कुछ भी मिलता है, उसे प्रसाद समझकर स्वीकार करना चाहिए।

यह पद हमें सिखाता है कि जीवन में समभाव बनाए रखना ही सच्ची बुद्धिमत्ता है।

काव्य-सौंदर्य

1. नीति और भक्ति का समन्वय।
2. "दई दई" में पुनरुक्ति अलंकार का सुंदर प्रयोग।
3. सरल भाषा में गूढ़ जीवन-दर्शन।
4. समता और धैर्य का आदर्श संदेश।

"कौन सुने, कासों कहौं, सुरति बिसारि नाइ।

बदनबदी ज्यों लेत हैं, ए बदरा बदराइ।। 63 ॥ "

अब इसे पूर्ववत् प्रसंग सहित विस्तृत व्याख्या में समझते हैं —

प्रसंग

यह पद वियोग-श्रृंगार से संबंधित है। इसमें विरहिणी नायिका की करुण दशा का मार्मिक चित्रण किया गया है। प्रिय के वियोग में उसका मन अत्यंत व्याकुल है। वह अपनी पीड़ा किससे कहे — यही उसकी सबसे बड़ी समस्या है।

कवि ने यहाँ विरह-व्यथा, स्मृति और प्रकृति (बादल) के माध्यम से नायिका की आंतरिक अवस्था को व्यक्त किया है।

पंक्ति-दर-पंक्ति विस्तृत व्याख्या

१. “कौन सुने, कासों कहौं, सुरति बिसारि नाइ।”

शब्दार्थ

- कौन सुने = मेरी बात कौन सुनेगा?
- कासों कहौं = किससे कहूँ?
- सुरति = स्मृति, प्रिय की याद
- बिसारि नाइ = भूल नहीं सकती

व्याख्या

विरहिणी नायिका कहती है — मेरी पीड़ा कौन सुनेगा? मैं अपनी व्यथा किससे कहूँ?

मैं अपने प्रिय की स्मृति को भूल भी नहीं सकती।

अर्थात् प्रिय की याद उसके हृदय में इतनी गहराई से बसी है कि वह चाहकर भी उसे भुला नहीं पाती। उसके पास न कोई सखा है, न सहारा। उसका दुःख कहने वाला कोई नहीं।

२. “बदनबदी ज्यों लेत हैं, ए बदरा बदराइ।”

शब्दार्थ

- बदनबदी = ‘बद-बद’ की ध्वनि, व्याकुल पुकार
- ज्यों लेत हैं = जैसे कहते/उच्चारते हैं
- बदरा = बादल
- बदराइ = घिर आए हैं / छा गए हैं

व्याख्या

नायिका कहती है — ये बादल जैसे ‘बद-बद’ करते हुए मेरी ही व्यथा दोहरा रहे हैं।

आकाश में घिरे हुए बादल उसकी व्याकुल पुकार के समान प्रतीत होते हैं। जैसे वह ‘हाय-हाय’ कहकर विलाप कर रही है, वैसे ही बादलों की गर्जना भी उसके दुःख का प्रतिध्वनन कर रही है।

यहाँ प्रकृति और नायिका की भावावस्था में सामंजस्य दिखाई देता है। बादलों का घिरना उसके मन के घने दुःख का प्रतीक है।

भावार्थ

इस पद में विरहिणी नायिका की करुण दशा व्यक्त हुई है।

वह अपने प्रिय की स्मृति को भूल नहीं पा रही। उसके दुःख को सुनने वाला कोई नहीं। चारों ओर बादल घिरे हैं और उनकी ध्वनि उसे अपनी ही करुण पुकार जैसी प्रतीत होती है।

प्रकृति उसकी मनःस्थिति का प्रतिबिंब बन जाती है। बादलों का अंधकार उसके हृदय के अंधकार का प्रतीक है।

काव्य-सौंदर्य

1. वियोग-श्रृंगार रस की प्रधानता।
2. प्रकृति और मनोभाव का सुंदर सामंजस्य।
3. “बदनबदी” और “बदरा बदराइ” में ध्वन्यात्मक सौंदर्य।
4. करुणा और विरह की मार्मिक अभिव्यक्ति।